वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 423
ISBN-978-93-84003-11-1

ज्योतिर्लोक जिनालय विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

श्रुतपंचमी पर्व के पावन दिवस कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी के 65वें जन्मदिवस ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुत पंचमी) 2 जून 2014 के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी, 2 जून 2014	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस बीसवीं सदी में नारियों में सर्वप्रथम ग्रंथ लेखन का कार्य करके 300 ग्रंथों का लेखन करके साहित्य भंडार को समृद्ध करने में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। अपने 60 वर्ष के दीक्षित जीवन में निरंतर श्रुत की आराधना करने वाली पूज्य माताजी की लेखनी अभी भी रुकी नहीं है तथा 80 वर्ष की अवस्था में भी लेखन कार्य करके नित्य नयी कृतियाँ उनकी लेखनी से प्रसूत हो रही हैं, जिनमें विभिन्न स्तोत्र पाठ, स्वाध्याय के ग्रंथ एवं पूजा विधान आदि हैं। भक्ति मार्ग को प्रशस्त करने वाली पूजाओं में भी पूज्य माताजी उस अनुयोग संबंधी संपूर्ण विषयवस्तु को गागर में सागर की तरह समाहित करने में अत्यंत निष्णात हैं। माताजी द्वारा रचित अनेक छोटे–बड़े विधानों को करके लोग भक्ति सरिता में अवगाहन करके आनंद की अनुभूति करते हैं।

श्रावकों के षट्कर्तव्य आचार्यों ने बताए हैं–

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थाणां, षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप एवं दान गृहस्थों को प्रतिदिन करते रहना चाहिए जिससे उनका गृहस्थ धर्म सार्थक माना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के माध्यम से प्रकाशित करके नित्य नई कृतियाँ पाठकों तक पहुँचाने का सौभाग्य दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के पदाधिकारियों को प्राप्त होता है जो हमारे लिये गौरव की बात है। उसी क्रम में ''ज्योतिर्लोक जिनालय विधान'' की यह पुस्तक भी आप तक पहुँचायी जा रही है। इस विधान को करके भक्त ज्योतिषी देवों के जिनमंदिरों की भक्ति करके असीम पुण्य का संचय करें यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें और आगे भी इसी तरह अपने ज्ञान से भक्तों को सिंचित करती रहें। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यह जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भक्ति मार्ग में प्रवृत्त हुआ प्रत्येक प्राणी निवृत्ति की साधना करता हुआ अपनी चिच्चैतन्यरूपी आत्मा को उज्ज्वल करके भगवान बना सकता है। श्रावक चूँकि सावद्य से पूर्ण निवृत्त नहीं हो सकता है तथापि अपने पाप पुंज को अल्प अथवा परम्परागत नष्ट करने के लिए आत्महित के साधन गृहस्थ के षट्कर्म का पालन करना उसके आवश्यक होता है।

देवपूजा के अन्तर्गत इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र, शांतिमंडल आदि विधान जो कि नैमित्तिक कार्य होते हैं, इनके द्वारा आत्मा में विशेष विशुद्धि उत्पन्न होती है। अष्टान्हिकादि पर्वो में सिद्धचक्र विधान करने की प्राचीन परम्परा चली आ रही है।

पूजा विधानों की श्रृंखला में परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने यह **'ज्योतिर्लोक जिनालय विधान'** एक नूतनकृति के रूप में हमें प्रदान किया है। इस विधान में मध्यलोक में जो ज्योतिष्क देव हैं उनके विमानों में असंख्यातों जिनालय एवं असख्यातों जिनबिम्ब विराजमान हैं, उनकी पूजा इस विधान में की गई है। सर्वप्रथम मंगलाचरण से शुभारम्भ है। उसके बाद **'ज्योतिष्क देव जिनालय'** की समुच्चय पूजा है। सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र और तारे ये 5 प्रकार के ज्योतिष्क देव होते हैं, जो कि नित्य ही मेरू की प्रदक्षिणा लगाते रहते हैं और इन्हीं के निमित्त से दिन–रात का विभाग होता है। इस पूजा की जयमाला में पूज्य माताजी ने लिखा है–इस पृथ्वी से कौन से ज्योतिष्क देव के विमान कितनी ऊँचाई पर हैं। जैसे–

इस भू से इकतिस लाख साठ हजार मील सुगगन में।
तारा विमान सुशोभते नित, घूमते हैं अधर में।।
बत्तीस लाख सुमील ऊपर, रवि विमान सदा रहें।
पैंतीस लाख सुबीस सहस, सुमील पे चंदा रहें।।3।।

अर्थात् इस पृथ्वी से 31 लाख 60 हजार मील ऊपर आकाश में तारा के विमान हैं, 32 लाख ऊपर सूर्य के विमान हैं, 35 लाख 20 हजार ऊपर चंद्रमा के विमान हैं, 35 लाख 36 हजार मील ऊपर नक्षत्र के विमान हैं। ग्रहों में बुध ग्रह के विमान 35 लाख 52 हजार मील, शुक्र ग्रह के विमान 35 लाख 64 हजार

मील, गुरू ग्रह के विमान 35 लाख 76 हजार मील, मंगल ग्रह के विमान 35 लाख 88 हजार मील, शनि ग्रह के विमान 36 लाख मील अर्थात् सबसे ऊपर हैं। इस चित्रा पृथ्वी से 790 से 900 योजन की अर्थात् 110 योजन की ऊँचाई में ज्योतिषी देवों के विमान हैं। इन सभी विमानों में जिनमंदिर हैं और 1–1 जिनमंदिर में 108–108 जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं। इस प्रकार इस विधान में ज्योतिष्क देवों के असंख्यातों जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाओं की पूजा हो जाती है।

दूसरी पूजा **'चंद्रमा जिनालय** पूजा है। इसमें मध्यलोक में चन्द्रविमान में स्थित असंख्यातों जिनालय, जिनबिम्बों की पूजा है। इस पूजा में 8 अर्घ्य एवं 2 पूर्णार्घ्य हैं। जम्बूद्वीप से लेकर स्वयंभूरमण समुद्र पर्यन्त जितने भी चन्द्र विमान हैं, उन सभी में विराजमान असंख्यातों जिनमंदिर, जिनप्रतिमाओं को इस पूजा में अर्घ्य चढ़ाया है।

पूजा नं. 3 **'सूर्य जिनालय पूजा'** में मध्यलोक में सूर्य विमान में स्थित जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाओं की पूजा है। इस पूजा में भी 8 अर्घ्य एवं 2 पूर्णार्घ्य हैं। पूजा नं. 4 **'ग्रह जिनालय पूजा'** में मध्यलोक में ग्रह विमान में विराजमान असंख्यातों जिनालय एवं जिनबिम्बों की पूजा है। इस पूजा में बुध, शुक्र आदि 88 ग्रहों के 88 अर्घ्य एवं 2 पूर्णार्घ्य हैं। 1 चन्द्रमा के 88 ग्रह परिवार देव हैं जम्बूद्वीप में 2 सूर्य 2 चन्द्रमा हैं। नरलोक में 132 चन्द्रमा के ग्यारह हजार छह सौ सोलह ग्रह हो जाते हैं नरलोक के बाहर असंख्यातों ग्रह हैं इन सभी ग्रहों के विमानों में स्थित असंख्यात जिनालयों एवं जिनप्रतिमाओं को पूर्णार्घ्य चढ़ाया है।

पूजा नं. 5 **'नक्षत्र जिनालय पूजा'** में मध्यलोक में नक्षत्र विमानों में स्थित असंख्यात जिनालय एवं जिनबिम्बों की पूजा है। इसमें 28 नक्षत्रों के 28 अर्घ्य एवं 3 पूर्णार्घ्य हैं। पूजा नं. 6 **'प्रकीर्णक तारक जिनालय पूजा'** में मध्यलोक में ताराओं के विमान में स्थित जिनालय एवं जिनबिम्बों की पूजा है। इसमें 11 अर्घ्य एवं 2 पूर्णार्घ्य है। इसमें ध्रुव तारा जिनालय के भी अर्घ्य चढ़ाए हैं।

इस प्रकार इस विधान में कुल 6 पूजा, 143 अर्घ्य, 11 पूर्णार्घ्य एवं 6 जयमालाएँ हैं। अंत में प्रशस्ति एवं ज्योतिर्लोक जिनालय विधान की मंगल आरती है। यह विधान सभी के जीवन में अमंगल दोष को दूर कर मंगल करे, यही मंगल भावना है।

दो शब्द

आर्यिका सुदृढ़मती (संघस्थ)

जैनधर्म में तीन लोक माने गए हैं। ऊर्ध्वलोक,मध्यलोक और अधोलोक। मध्यलोक में असंख्यात द्वीप समुद्र हैं। जिनमें 13 द्वीपों तक अकृत्रिम जिनमंदिर हैं जिनकी संख्या 458 है। इस मध्यलोक में ही चित्रा पृथ्वी से 790 योजन की ऊँचाई पर आकाश में अधर तारा, नक्षत्र, चन्द्र, सूर्य आदि ज्योतिषी देवों के विमान हैं। सर्वप्रथम 790 योजन पर ताराओं के विमान हैं पुनः ऊपर–ऊपर 900 योजन तक ये सभी विमान रहते हैं। ये सभी विमान जंबूद्वीप से लेकर अंतिम स्वयंभूरमण समुद्र तक होने से असंख्यात हैं। जिनमें ढाईद्वीप तक तो ये घूमते रहते हैं और मेरू की प्रदक्षिणा देते रहते हैं और इसके आगे सब विमान जहाँ के तहाँ स्थिर हैं। ऐसा तिलोयपण्णत्ति, लोकविभाग, त्रिलोकसार, जंबूद्वीपपण्णत्ती आदि करणानुयोग के ग्रंथों से ज्ञात होता है। जैसा कि तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ में भी चतुर्थ अध्याय में आचार्य श्री उमास्वामी ने लिखा है–

मेरूप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके।।13।। **तत्कृतः कालविभागः**।।14।। और **बहिरवस्थिताः**।।15। इन्हीं के निमित्त से दिन रात का विभाग होता है।

प्रत्येक विमान में ज्योतिर्वासी देवों के महल बने हुए हैं जिन सबमें जिनमंदिर हैं अतः ज्योतिष देवों के भी असंख्यात जिनमंदिर हैं।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने करणानुयोग के सभी ग्रंथों का अनेक बार स्वाध्याय करके इनके साररूप में इस विषय संबंधी पुस्तकों का भी लेखन किया जिनमें ''जैन ज्योतिर्लोक'' त्रिलोक भास्कर, जैन भूगोल, जंबूद्वीप आदि पुस्तकें हैं जिनके माध्यम से करणानुयोग के स्वाध्यायी जन अपना ज्ञानवर्धन कर आनंद का अनुभव करते हैं। उसी श्रृंखला में पूजा–विधान के द्वारा भक्ति रस में सराबोर होने वाले भक्तों के लिये भी पूजा के माध्यम से ज्योतिषी देवों के असंख्यात जिनमंदिरों की आराधना करने के लिये पूज्य माताजी ने ''ज्योतिर्लोक जिनालय विधान'' नामक इस कृति को हमारे लिये प्रदान किया है। इस विधान को करने वाले स्वाध्याय का भी लाभ लेंगे और भक्ति करके असंख्य कर्मों की निर्जरा करके पुण्य का बंध करेंगे। ऐसी अनमोल कृतियों को प्रदान करने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संपूर्ण जैन समाज पर अनंत उपकार हैं जिनका मूल्य नहीं चुकाया जा सकता। ऐसी सरस्वती स्वरूपा, वाग्देवी, विधानवाचस्पति, दिव्यशक्ति पूज्य माताजी के चरणों में बारंबार वंदामि करते हैं।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. मंगलाचरण	1
2. ज्योतिष्क देव जिनालय पूजा	3
3. चन्द्रमा जिनालय पूजा	8
4. सूर्य जिनालय पूजा	15
5. ग्रह जिनालय पूजा	22
6. नक्षत्र जिनालय पूजा	40
7. प्रकीर्णक तारक जिनालय पूजा	49
8. प्रशस्ति	56
9. ज्योतिर्लोक जिनालय विधान की आरती	57
10. सम्मेदशिखर चालीसा	58
11. नवग्रहशांति स्तोत्र	61
12. भजन	63
13. भजन	64

मण्डल का नक्शा

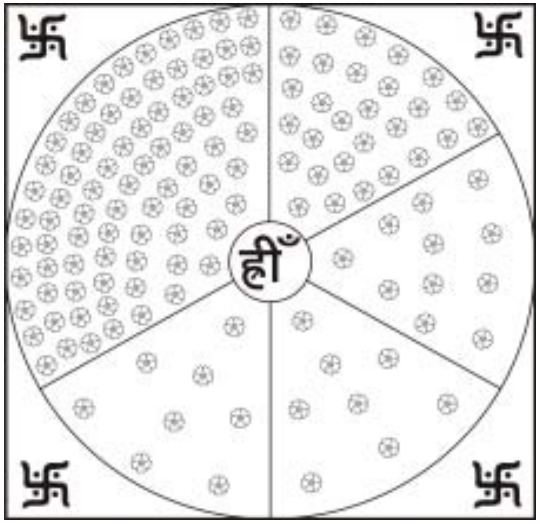

पाँच कोष्ठक में अर्घ्य

प्रथम में -8 अर्घ्य
द्वितीय में -8 अर्घ्य
तृतीय में -88 अर्घ्य
चतुर्थ में -28 अर्घ्य
पंचम में -11 अर्घ्य

कुल-143 अर्घ्य

कुल पूजा-6, अर्घ्य-143, पूर्णार्घ्य-11, जयमाला-6

ज्योतिर्लोक जिनालय विधान

मंगलाचरणम्

भवनविमानज्योति–र्व्यन्तरलोकविश्वचैत्यानि।
त्रिजगदभिवन्दितानां, वन्दे त्रेधा जिनेंद्राणाम्।।1।।

ज्योतिषामथ लोकस्य, भूतयेऽद्भुतसंपदः।
गृहाः स्वयंभुवःसन्ति, विमानेषु नमामि तान्।।2।।

इति स्तुतिपथातीत–श्रीभृतामर्हतां मम।
चैत्यानामस्तु संकीर्तिः, सर्वास्रवनिरोधिनी[1]।।3।।

१. चैत्यभक्ति–श्रीगौतमस्वामी विरचित ।

ज्योतिर्व्यंतर भावनामरगृहे, मेरौ कुलाद्रौ तथा।
जंबूशाल्मलि चैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु।।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नंदीश्वरे।
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु मे (नः) मंगलम्[1]।।4।।

–आर्यास्कंध छंद–

ज्योतिर्लोकेऽगणिता भासन्ते भासमानसुरनुत निलयाः।
तेषु जिनसूर्यबिम्बान् , रविशशिशोभातिशायिनः स्तौमि[2]।।5।।

–अनुष्टुप् छंद–

ज्योतिर्वासिविमानेषु, संख्यातीता जिनालयाः।
असंख्या मूर्तयस्तत्र, ते ताः कुर्वन्तु मंगलम्।।6।।

जिनेन्द्रा जिनबिम्बानि, जिनालया निषीधिकाः।
ते तानि ते च ता नित्यं, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।7।।

त्रैलोक्यं मंगलं कुर्यात् , मंगलं नवदेवताः।
मंगलं शांतिनाथोऽर्हन्, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।8।।

परं ज्योतिः प्रयच्छन्तु, ज्योतिर्लोकजिनालयाः।
सर्वे ग्रहाः प्रसीदन्तु, सदा कुर्वन्तु मंगलम्।।9।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

१. मंगलाष्टक। २. त्रैलोक्यवंदना मेरे द्वारा (गणिनी ज्ञानमती द्वारा) रचित।

पूजा नं.-1
ज्योतिष्क देव जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

पृथ्वी से सात शतक नब्बे, योजन ऊपर ज्योतिष सुर हैं।
रवि शशि ग्रह नखत और तारे, ये पाँच भेद ज्योतिष सुर हैं।।
सबके विमान में जिनमंदिर, मणिमय शाश्वत जिनप्रतिमायें।
उनको आह्वानन कर पूजूँ, ये मोक्षमार्ग को दिखलायें।।1।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-भुजंगप्रयात छंद

पयोसिंधु का नीर झारी भराऊँ।
प्रभू के चरण तीन धारा कराऊँ।।
रवी चंद ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।1।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधीत चंदन घिसा भर कटोरी।
चढ़ाऊँ चरण में कटे कर्म डोरी।।रवी.।।2।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

धुले शालि तंदुल धरूं पुंज आगे।
मिले आत्म सम्पति सभी दुःख भागें।।रवी.।।3।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोंगरा केवड़ा पुष्प लाऊं।
प्रभू चर्ण में अर्प्य निजसौख्य पाऊँ।।
रवी चंद ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।4।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ सेमई खीर लाडू बनाके।
प्रभू को चढ़ाऊं क्षुधा व्याधि नाशे।।रवी.।।5।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की जगमगे ध्वांत नाशे।
करूं आरती ज्ञान की ज्योति भासे।।रवी.।।6।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनि पात्र में धूप खेऊं सुगन्धी।
जलें कर्म फैले सुयश की सुगंधी।।रवी.।।7।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अंगूर फल थाल भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें मोक्ष फल आश धरके।।रवी.।।8।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिला अर्घ में स्वर्ण चांदी कुसुम को।
चढ़ाऊँ तुम्हें आत्मनिधि पूर्ण कर दो।।रवी.।।9।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

हेम भृंग में स्वच्छ जल, जिनपद धार करंत।
भविजन का मन हो अमल, परमानंद भरंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली मोंगरा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले आत्मसुखसार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं ज्योतिर्वासिदेवविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

ज्योतिष देव विमान के, जिनगृह संख्यातीत।
नमूँ नमूँ कर जोड़ के, बनूं स्वात्म के मीत।।1।।

गीता छंद

जय जय जिनेश्वर धाम जगमें, इंद्र सौ से वंद्य हैं।
जय जय जिनेश्वर मूर्तियां, चिंतामणी शुभ रत्न हैं।।
जय जय गणाधिप साधुगण, नित ध्यावते हैं चित्त में।
जय भव्य पंकज बोध भास्कर, मूर्तियां रवि बिंब में।।2।।

इस भू से इकतिस लाख साठ हजार मील सुगगन में।
तारा विमान सुशोभते नित, घूमते हैं अधर में।।
बत्तीस लाख सुमील ऊपर, रवि विमान सदा रहें।
पैंतीस लाख सुबीस सहस, सुमील पे चंदा रहें।।3।।

नक्षत्र पैंतीस लाख छत्तिस, सहस मीलों पे रहें।।
बुध लाख पैंतिस सहस बावन, मील पे भ्रमते कहें।।
फिर लाख पैंतिस सहस चौंसठ, मील पे ग्रह शुक्र हैं।
पैंतीस लाख सहस छियत्तर, मील पर गुरु बिंब हैं।।4।।

मंगल सुपैंतिस लाख अट्ठासी सहस ही मील पे।
शनि ग्रह सुछत्तीस लाख मीलों के उपरि अति उच्च पे।।
चित्रा धरा से सात सौ, नब्बे से नौ सौ योजनों।
तक एक सौ दस योजनों में, ज्योतिषी जग है भणों।।5।।

शशि सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, के विमानहिं चमकते।
ये अर्ध गोलक सम इन्हीं में, सुर नगर में सुर बसें।।
सबसे बड़े शशि बिंब तारा, के विमान लघू रहें।
त्रय सहस इक सौ सयेंतालिस, मील कुछ अधिकहिं कहें।।6।।

ये बड़े हैं तारा लघु, दो सौ पचासहिं मील के।
इनमें बने हैं महल उनमें, देवगण रहते सबे।
ये देव देवी मनुज सम, अतिरूप वान् वहां रहें।
इनके विमानहिं चमकते, दिन रात इनसे बन रहें।।7।।

बस पाँच सौ दस सही, अड़तालिस बटे इकसठ[1] कहे।
योजन महा यह जानिये, इनका गमन का क्षेत्र है।।
इसमें गली इकसौ तिरासी, सूर्य की मानी गईं।
पंद्रह गली हैं चंद्र की, दो पक्ष में विचरें यहीं।।8।।

इन सब विमानहिं मध्य में, उत्तुंग स्वर्णिम कूट हैं।
उनपर जिनेश्वर भवन शाश्वत, शोभते अति पूत[2] हैं।।
सब में जिनेश्वर बिंब इकसौ-आठ इक सौ आठ हैं।
जो देवगण इनको जजें नित, भजें मंगल ठाठ हैं।।9।।

जो नर बहुत विध तप तपें, बहु पुण्य संचय भी करें।
सम्यक्त्वनिधि नहिं पा सकें, वे ही यहां पर अवतरें।।
जिनदर्श करके तृप्त हों, जातिस्मृती वृष श्रवण से।
जिन पंचकल्याणक महोत्सव, देखते अन विभव से।।10।।

सम्यक्त्वलब्धी प्राप्त कर, निज में मगन जिन भक्त हों।
भव पंच परिवर्तन मिटा, कुछ ही भवों में मुक्त हों।।
सम्यक्त्वनिधि अनुपम निधी, जिन भक्त ही करते सुलभ।
सुख भोग कर नर तन धरें फिर, आत्म निधि उनको सुलभ।।11।।

धन धन्य है यह शुभ घड़ी, धन धन्य जीवन सार्थ है।
जिन अर्चना का शुभ समय, आया उदय में आज है।।

---

1. 510 48/61 महायोजन सर्व ज्योतिषियों का गमन क्षेत्र है। 2. पावन।

जिन वंदना से आज मेरे, चित्त की कलियां खिलीं।
मैं 'ज्ञानमति' विकसित करूँ, अब रत्नत्रय निधियां मिलीं।।12।

घत्ता

जय जय जिनमंदिर, भव्य हितंकर, पूजत त्रिभुवन पूज्य बनें।
जय जय जिनप्रतिमा, जिनगुण महिमा, पूजत ही हो सौख्य घने।।13।।

ॐ ह्रीं चंद्रसूर्यग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकताराज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद

जो भव्य ज्योतिर्लोक के, जिनभवन की अर्चा करें।
वे सब अमंगल दूर कर, संपूर्ण मंगल विस्तरें।।
इन असंख्यातों जिनभवन, जिनमूर्तियों की अर्चना।
कैवल्य 'ज्ञानमती' प्रकाशे, सिद्धि दे जहं अंत ना।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-2
चंद्रमा जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

जंबुदीप लवणोदधि से ले, असंख्यात द्वीपोदधि।
अंतिम जलधि स्वयंभूरमणं, तक फैले ये ज्योतिषि।।
चंद्र इंद्र हैं ये भी संख्यातीत कहाये जग में।
इनके बिंबों के जिनगृह को, पूजूँ रुचिधर मन में।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके चंद्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके चंद्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके चंद्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-नरेन्द्र छंद

जल धारा से जिनपद जजते, जन्म जरा मृति नाशें।
आतम अनुभव सम रस पीकर, सुख स्वातंत्र्य प्रकाशें।
चंद्र विमानों के जिनमंदिर, पूजूँ मन वच तन से।
सम्यग्ज्ञान कली विकसित हो, फैले सुरभि सुयश से।।1।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सुगंधित चंदन लेकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
नाना सुख सौभाग्य प्राप्त हों, भव भव तपन बुझाऊँ।।चंद्र.।।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र किरण सम उज्ज्वल अक्षत, सन्मुख पुंज चढ़ाऊँ।
नव निधि चौदह रत्न प्राप्तकर, अक्षय सुख पा जाऊँ।।चंद्र.।।3।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुल कमल नीलोत्पल सुरभित, सुमन चढ़ाऊँ प्रभु को।
रोग शोक दुख दारिद विघटें, काम देव सम तनु हो।।चंद्र.।।4।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी मोदक हलुआ, चरु चढ़ाऊँ रुचि से।
तनु की शक्ति कांति बढ़ जावे, शिव सुख हो निज बल से।।चंद्र.।।5।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक की लौ जगमगती, करूँ आरती रुचि से।
हृदय मोह अज्ञान हटाकर, भरूँ भारती सुख से।।चंद्र.।।6।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित खेय अग्नि में, धूम्र उड़ाऊँ नभ में।
अशुभकर्म को भस्म करूँ यश सुरभी फैले जग में।।चंद्र.।।7।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर व कमरख, अर्पूं सरस मधुर फल।
सर्व मनोरथ पूरण होवें, मिले शीघ्र ही शिव फल।।चंद्र.।।8।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमादिक, अर्घ चढ़ाऊँ प्रभु को।
रत्नत्रय पदवी अनर्घ जो, अब मिल जावे मुझको।।चंद्र.।।9।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुख लाभ, मिले सर्वसुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

शशिविमान के मध्य में, दिव्य कूट दीपंत।
उस पर शाश्वत जिनभवन, जजूँ पुष्प विकिरंत।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

गीता छंद

चित्रा धरा से आठ सौ अस्सी सुयोजन गगन में।
शशि के विमान सुशोभते ये अर्ध गोलक सम बने।।
इस प्रथम जम्बूद्वीप में दो चंद्रमा गतिमान हैं।
इनके अकृत्रिम जिनभवन मैं जजूँ सौख्य निधान हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वयचन्द्रविमानस्थितद्विजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लवणोदधी में चार माने चंद्रमा गतिशील हैं।
इनके विमान अधर गमन में दें परिक्रम नित्य हैं।।
प्रत्येक में जिनधाम हैं जो मुनिगणों से वंद्य हैं।
प्रत्येक में जिनबिंब इकसौ आठ-आठ अनिंद्य हैं।।2।।

ॐ ह्रीं लवणसमुद्रस्थचतुश्चन्द्रविमानस्थितचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर द्वीप धातकि खंड में बारह शशी विख्यात हैं।
ये चंद्र ज्योतिषदेव में हैं इंद्र निशि के कांत हैं।।
इन अर्ध गोलक बीच में वर दिव्य कूट उतुंग है।
उसपे जिनेश्वरधाम अनुपम शिखरबंद उतुंग हैं।।3।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वादशचन्द्रविमानस्थितद्वादशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कालोदधी में चंद्र ब्यालिस रात्रि में अति चमकते।
देते सुमेरू की प्रदिक्षण दिव्य सुख से दमकते।।

प्रत्येक चंद्र विमान में जिनधाम शाश्वत शोभते।
उन पूजते सब व्याधि संकट दूर से मुख मोड़ते।।4।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसमुद्रसंबंधिद्विचत्वारिंशत्चन्द्रविमानस्थितद्विचत्वारिंशत्-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर द्वीप पुष्कर अर्ध में शशि हैं बहत्तर घूमते।
इनके जिनालय में सुराधिप भक्ति से नत झूमते।।
इन मंदिरों की अर्चना सब पाप ताप निवारती।
जो वंदना भक्ती करें उनको भवोदधि तारती।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थद्वासप्ततिचन्द्रविमानस्थितद्वासप्ततिजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नग मानुषोत्तर से परे शशि बिंब स्थिर राजते।
बारह शतक चौंसठ शशी वसु[1] वलय में प्रतिभासते।।
इनके जिनालय को जजूँ जिनबिंब की अर्चा करूँ।
सब पाप पंकिल धोय कर नित आत्म की चर्चा करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अपरपुष्पकरार्धद्वीपस्थद्वादशशतचतुःपष्टिचन्द्रविमानस्थितद्वादश-शतचतुः- षष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कर समुद्र में वलय बत्तिस प्रथम वलये संख्ययो।
पच्चीससौ अट्ठाइसे प्रतिवलय चउ-चउ वर्धिये।।
ब्यासी हजार व आठ सौ अस्सी सभी शशि जानिये।
प्रत्येक के जिनधाम को पूजत अतुल सुख ठानिये।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्करवरसमुद्रस्थद्वयशीतिसहस्रअष्टशताशीतिचन्द्रविमानस्थितएतावत् जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वारुणी वर द्वीप चौथा वहां चौंसठ वलय हैं।
पुष्कर समुद्र से द्विगुण शशि पहले वलय में कथित हैं।।

1. आठ।

प्रतिवलय चउ-चउ बढ़ रहें यह क्रम सभी द्वीपोदधी।
सब चंद्र संख्यातीत के जिनधाम पूजूँ धर रुची।।8।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपप्रभृतिस्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतचन्द्रविमानस्थित संख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

इस प्रथम जंबूद्वीप से लेकर अढ़ाई द्वीप तक।
शशि एकसौ बत्तीस हैं मेरू प्रदिक्षण देंय सब।।
नग मानुषोत्तर से परे ये वृद्धि गत होते हुये।
संख्यारहित हैं चंद्रमा इनके जिनालय पूजिये।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपात् स्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतचन्द्रविमानस्थितसंख्यातीत जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक जिनगृह में जिनेश्वर बिंब इक सौ आठ हैं।
चौदह सहस दो शतक छप्पन ढाईद्वीप के ख्यात हैं।।
संपूर्ण चंद्र विमान के जिनबिंब संख्यातीत हैं।
मैं पूजहूँ नित अर्घ ले ये मुक्तिरमणी मीत हैं।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपात् स्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतचन्द्रविमानस्थितसंख्यातीत जिनालयमध्यविराजमानसंख्यातीतजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं ज्योतिर्वासिदेवविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय जय चंद्रविमानों के, जिनमंदिर मुनिगण नित वंदें।
जय जय जिन प्रतिमायें मणिमय, वंदत ही पापतिमिर खंडें।।
जय जय मंदिर के मानस्तंभ, जय जय तोरण की जिनप्रतिमा।
जय वनभूमी के चैत्य वृक्ष, जय पद्मासन सोहें प्रतिमा।।1।।

यह शशिविमान है अर्धगोल, चमकीलि धातु से बना हुआ।
पृथ्वीकायिक उद्योत कर्म, वाले जीवों से सना हुआ।।
यह लगभग तीन सहस छह सौ, बाहत्तर मील व्यास धारे।
इसकी बारह हजार किरणें, जो शीत चांदनी विस्तारें।।2।।

सोलह हजार अभियोग्य देव, विक्रिय से वाहन बनते हैं।
दिशक्रम से केशरि गज व वृषभ, हय रूप धार के जुतते हैं।।
ये सतत खींचते हैं विमान, ये मेरु परिक्रमा करते हैं।
इनसे दिन रात विभाग बने, ये बिंब घूमते रहते हैं।।3।।

शशि के नीचे राहु विमान नित, अपनी गति से चलता है।
एकेक कला ढकता क्रम से, फिर एकहि एक छोड़ता है।।
इससे ही कृष्ण पक्ष अरु शुक्ल पक्ष हो जाते महिने में।
छह छह महिने में ग्रहण पड़े, राहु से शशि के ढकने में।।।4।।

इस चंद्र इंद्र के चार महादेवी सुंदरता से सोहें।
चंद्राभा और सुसीमा प्रभंकरा व अर्चिमालिनी हैं।।
सोलह हजार देवियां हैं बहुतेरे परिकर देव कहें।
शशि देह सात धनु तुंग आयु इक पल्य एक लख वर्ष रहे।।5।।

इस शशिविमान के मध्य कूट पर, शाश्वत जिनमंदिर सोहें।
चउदिश में शशि के भवन बनें, जिसमें शशि इंद्र राजते हैं।।
सामानिक तनुरक्षक प्रकीर्ण, किल्विषक देव वहं रहते हैं।
ये देव विक्रिया के तनु से, सर्वत्र विचरते रहते हैं।।6।।

जिनवर के पंच कल्याणक में, नंदीश्वर मेरु जिनालय में।
जाते बहु पुण्य करें अर्जन, क्रीड़ा से विचरें बहुथल में।।
जातिस्मृति धर्मश्रवण करके, जिनमहिमा या देवर्द्धि लखें।
सम्यग्दर्शन निधि पा जाते निज आतमसुख पीयूष चखें।।7।।

जिनमंदिर रत्न चंदोवों से, अठ मंगल द्रव्यों से शोभें।
घंटा किंकिणि वंदनमाला, चामर छत्रादिक से शोभें।।

मंगलघट धूप घड़े वहां पे, मुक्ता सुवरण की मालायें।
जिन प्रतिमा इक सौ आठ वहां, भव्यों को शिवपथ दिखलायें।।8।।

दोहा

मणिमय शाश्वत जिनभवन, जिनवर बिंब अनूप।
नमूँ नमूँ मुझको मिले, 'ज्ञानमती' निजरूप।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य जैन ज्योतिर्विमान की, जिनप्रतिमा को यजते हैं।
वे सर्व अमंगल दोष दूर कर नित नव मंगल भजते हैं।।
गुणमणि यश से इस भूतल पर, निज को आलोकित करते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, तिहुंलोक प्रकाशित करते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-3
सूर्य जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

इस प्रथम जंबू द्वीप में दो सूर्य दिन दिन चमकते।
ये ढाईद्वीपों तक सु इक सौ बत्तिसे दिनकर दिपें।।
ये अर्ध गोलक सम सभी भास्कर विमान प्रकाशते।
इन मध्य जिनमंदिर जजूँ ये आत्म ज्योति प्रकाशते।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-चाल-नंदीश्वर पूजा

मुनि मन सम जल अति स्वच्छ, चरणों धार करूं।
निज आतम हो प्रत्यक्ष, भवदधि शीघ्र तिरूं।।
भास्कर विमान जिनधाम, संख्यातीत कहें।
पूजत पाऊँ निज धाम, शिवतिय प्रीति गहे।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर गंध, चरणों लेप करूँ।
हो आतम गुण की गंध, भव संताप हरूं।।भास्कर.।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम तंदुल स्वच्छ, पुंज चढ़ाऊँ मैं।
निज आतम गुण प्रत्यक्ष, निज पद पाऊँ मैं।।भास्कर.।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर तरु के सुमन सुगंध, चरण चढ़ाऊँ मैं।
निज आतम कीर्ति अमंद, पा हरषाऊँ मैं।।भास्कर.।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी पकवान, आप चढ़ाऊँ मैं।
कर आत्म सुधारस पान, निज सुख पाऊँ मैं।।भास्कर.।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर शिखा चमकेय, जग का ध्वांत हरे।
आरति से मन हरषेय, ज्ञान विकास करे।।भास्कर.।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सित चंदन मिश्रित धूप, खेऊं अगनी में।
मिले निजानंद रस कूप, शिवतिय परणूँ मैं।।भास्कर.।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

काजू पिस्ता अखरोट, आप चढ़ाऊँ मैं।
सक कार्य सरें बेरोक, बलि बलि जाऊं मैं।।भास्कर.।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अर्घ चढ़ाऊं आज, तुम चरणों आगे।
निज तीन रतन के काज, पूजूँ अघ भागे।।भास्कर.।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्म साम्राज्य, त्रिभुवन में सुखशांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

रवि विमान के मध्य में, दिव्य कूट दीपंत।
उनपे जिनगृह नित जजूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

जंबूद्वीप के भीतर इकसौ अस्सी योजन जानों।
लवणोदधि में तीन शतक तीसे योजन अधिकानों।।
इतने में इकसौ चौरासी गलियों में ये चलते।
दो रवि के विमान में दो जिनगृह पूजत दुख ढलते।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वयसूर्यविमानस्थितद्वयजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लवणोदधि के चार दिवाकर मेरु प्रदिक्षण देते।
अर्ध गोल सम ये विमान नीचे से खूब चमकते।।
सम भागों पर जिन मंदिर हैं रवि के भवन बने हैं।
जिन प्रतिमाओं को मैं पूजूँ देतीं सौख्य घने हैं।।2।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिस्थितचतुःसूर्यविमानस्थितचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकिखंड द्वीप में बारह सूर्य विमान चले हैं।
मेरू की प्रदक्षिणा क्रम में नित ही भ्रमण करे हैं।।
इनकी गति से दिन रात्री हो ये विमान ही चमके।
इनके जिनमंदिर मैं पूजूँ आत्म ज्योति अति चमके।।3।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वादशसूर्यविमानस्थितद्वादशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कालोदधि में ब्यालिस रवि हैं नित्य भ्रमण करते हैं।
बारह सहस उग्र किरणों के जगप्रकाश करते हैं।।
सबही सूर्य प्रतीन्द्र कहाते सब विमान चमकीले।
सबमें जिनमंदिर मैं पूजूँ अशुभ कर्म हों ढीले।।4।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिद्विचत्वारिंशत्सूर्यविमानस्थितद्वाचत्वारिंशज्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप में भास्कर कहे बहत्तर भ्रमते।
नित्य मेरु की करें प्रदिक्षण जगत् अंधेरा हरते।।
इनके जिनमंदिर को पूजूँ मोह अंधेरा भागे।
आत्म ज्योति से जगे उजेला मोक्ष महल हो आगे।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थद्विसप्ततिसूर्यविमानस्थितद्विसप्ततिजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुजोत्तर पर्वत से बाहर पुष्करार्ध पश्चिम में।
आठ वलय हैं सूर्य गमन के, रवि शशि घूमें उनमें।।
बारह सौ चौंसठ भास्कर वहं जहं ते तहं स्थिर हैं।
उनके जिनमंदिर मैं पूजूँ देते पद सुस्थिर हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अपरपुष्करार्धद्वीपस्थद्वादशशतचतुःषष्टिसूर्यविमानस्थितद्वादशशतचतुः षष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करवर समुद्र में बत्तिस वलय ज्योतिषी सुर के।
प्रथम वलय में पच्चीस सौ अट्ठाइस सूरज चमकें।।
ब्यासी सहस आठ सौ अस्सी सभी वलय के मानें।
इनके जिन मंदिर को पूजूँ ये सब अघ तम हाने।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्करवरसमुद्रस्थद्वयशीतिसहस्रअष्टशताशीतिसूर्यविमानस्थितएतावत् जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप वारुणीवर चौथे में प्रथम वलय में दूने।
चउ चउ बढ़ते चौंसठ वलयों तक सब रवि तम लूने[1]।।

1. नष्ट करते हैं।

आगे असंख्यात द्वीपोदधि तक ये बढ़ते जाते।
संख्यातीत सूर्य के जिनगृह पूजत निज पद पाते।।8।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपप्रभृतिस्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतसूर्यविमानस्थित संख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

जंबूद्वीप से अंत स्वयंभूरमण वार्धि पर्यंते।
असंख्यात रवि के विमान हैं मध्य लोक पर्यंते।।
मनुज लोक में इक सौ बत्तिस सूर्य विमान चमकते।
सबके जिनमंदिर मैं पूजूँ ज्ञान ज्योति विलसंते।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपात्स्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतसूर्यविमानस्थितसंख्यातीत जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुज लोक के रवि के जिनगृह इक सौ बत्तिस वंदूँ।
सबमें इकसौ आठ-आठ जिन प्रतिमा शत शत वंदूँ।।
चौदह हजार दो सौ छप्पन ये जिनप्रतिमा गिनने।
सब रवि जिनगृह की जिनप्रतिमा संख्यातीत सुनमनें।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपात्स्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतसूर्यविमानस्थितसंख्यातीत जिनालयमध्यविराजमानसंख्यातीतजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं ज्योतिर्वासिदेवविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

सूर्य बिंब जो दिख रहे, देव विमान विशाल।
इनमें श्री जिनभवन को, नमूँ नमूँ त्रयकाल।।1।।

शंभु छंद

जय जय जय रवि विमान के मधि, जिनमंदिर शाश्वत सुंदर हैं।
जय जय जय मणिमय अकृत्रिम, जिनप्रतिमा भव्य हितंकर हैं।।

जय जय पद्मासन जिन प्रतिमा, नासाग्रदृष्टि छवि सौम्य धरें।।
जय जय जिनवर सम जिनप्रतिमा, वंदत ही आतम सौख्य भरें।।2।।

ये रवि विमान पृथिवी कायिक, चमकीलि धातु से बने हुये।
जो आतप नाम कर्म वाले, वे जीवकाय ले जनम लिये।।
इनकी किरणें बस उष्ण रहें, नहिं मूल में किंचित् गर्मी है।
ये लगभग तीन सहस[1] इकसौ सैंतालिस मील के विस्तृत हैं।।3।।

मोटाई इससे आधी है, समतल में नगर बसा सुंदर।
मधि तुंग कूट पर जिनमंदिर, वंदन करते गणधर मुनिवर।।
मंदिर के चारों तरफ महल, उनमें भास्वान प्रतीन्द्र रहें।
उनके सामानिक आत्म रक्ष, प्राकीर्णकादि सब देव रहें।।4।।

मुखदेवी द्युतिश्रुति प्रभंकरा, सूर्य प्रभा अर्चिमालिनी हैं।
प्रत्येक के चउ चउ सहस प्रमित, परिवार देवियाँ मानी हैं।।
रवि देव की आयू एक पल्य, इक सहस वर्ष की होती है।
देवी की आयु निज पति की, आयु से आधी होती है।।5।।

ये रविविमान इक मिनट में हि, बहु दूर गमन कर लेते हैं।
चउ लख सैंतालिस हजार छह सौ तेइस मील चल लेते हैं।।
इस जंबूद्वीप में दो सूरज, इक यहां द्वितिय ऐरावत में।
ये दोनों मेरु परिक्रम दें, पहुँचे विदेह तब रात्रि बनें।।6।।

जब सूर्य प्रथम गलि में आता, जब नगर अयोध्या के चक्री।
निजगृह की छत से रविविमान, जिनबिंब दर्श करते चक्री।।
सैंतालिससहस[2] दो सौ त्रेसठ योजन कुछ अधिक नेत्र विषया।
इतनी दूरी से चक्रवर्ति, जिन दर्श करें हर्षित हृदया।।7।।

जो रवि के जिनमंदिर वंदे, उनके भवताप शांत होते।
वे रवि सम चमकें त्रिभुवन में, अतिशय सुख कीर्ति कांत होते।।

---

1. यह सूर्य विमान 48/61 योजन का है इसे 4000 मील से गुणा करने पर 3147-33/61 मील आता है।
2. 47263-7/20 योजन × 4000 = 189053400 मील होता है।

अज्ञान तिमिर की दूर भगा, निज आत्म सूर्य को पा लेते।
निज 'ज्ञानमती' शुभ ज्योती से, त्रिभुवन में प्रकाश छा देते।।8।।

दोहा

सूर्य विमान असंख्य में, जिनवर धाम महान्।
कोटि कोटि वंदन करूँ, बनूँ पूर्ण धनवान्।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य जैन ज्योतिर्विमान की, जिनप्रतिमा को यजते हैं।
वे सर्व अमंगल दोष दूर कर, नित नव मंगल भजते हैं।।
गुणमणि यश से इस भूतल पर, निज को आलोकित करते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति किरणों से, तिहुंलोक प्रकाशित करते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-4
ग्रह जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

एकेक चंद्र के अट्ठासी-अट्ठासी ग्रह श्रुत में माने।
ये ज्योतिर्वासी देव अर्ध गोलक विमान में सरधाने।।
इन सब विमान में दिव्यकूट उन पर शाश्वत जिनमंदिर हैं।
जिन प्रतिमा इकसौ आठ-आठ, जिन वंदन करें मुनीश्वर हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-सखी छंद

गंगाजल शीतल भरिये, जिनपद में धारा करिये।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसके, जिन चरणों लेपन करके।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिकिरण सदृश तंदुल हैं, पूजत ही पुण्य अमल है।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध के कुसुम खिले हैं, अर्पत मन कमल खिले हैं।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसभरी जलेबी भरके, अर्पूं मैं मन सुख भरके।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर जले जगमगते, आरति करते तम हरते।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप अगनि में खेऊ, निज आतम अनुभव लेऊँ।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अनार चढ़ाऊँ, शिव फल की आश लगाऊँ।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अर्घ समर्पूं रुचि से, निज में रत्नत्रय चमके।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्म साम्राज्य, त्रिभुवन में सुखशांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

इक शशि के परिवार सुर, अट्ठासी ग्रह जान।
असंख्यात ग्रह के गृहे, जिनगृह जजूँ महान।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

बुध ग्रह के विमान कुछ ही कम पाँच शतक मीलों के।
इसमें देव देवियों सह परिवार सहित हैं नीके।।
सब बुध ग्रह में जिन मंदिर हैं जिन प्रतिमा से सुंदर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति ये हैं सर्व हितंकर।।1।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र ग्रहों के रजत विमाना एक सहस मीलों के।
किरण पचीस शतक हैं शीतल मंद मंद ये चमकें।।
इनके गृह में जिनमंदिर हैं जिनप्रतिमा से सुंदर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति ये हैं सर्व हितंकर।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बृहस्पती' ग्रह के विमान सब कुछ कम मील सहस हैं।
मंद किरण युत नित्य चमकते स्फटिक मणी निर्मित हैं।।
इनके गृह में जिन मंदिर हैं जिन प्रतिमा से सुंदर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति ये हैं सर्व हितंकर।।3।।

ॐ ह्रीं बृहस्पतिग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंगल' ग्रह के पद्मराग मणिमय विमान अति शोभे।
पाँच शतक मील विस्तृत ये इससे आधे मोटे।।
इन विमान में जिन मंदिर हैं जिन प्रतिमा से सुंदर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति ये हैं सर्व हितंकर।।4।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।स

'शनि' विमान कंचनद्युति सुंदर मील पाँच सौ विस्तृत।
इनमें आधी मोटाई है अर्ध गोल सम चकमक।।
इन विमान में जिन मंदिर हैं जिन प्रतिमा से सुंदर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति ये हैं सर्व हितंकर।।5।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'काल' ग्रहों के सर्वविमानों में सुर गण नित हरते।
इनके महल अकृत्रिम सुंदर पुण्य विभव को धरते।।इन.।।6।।

ॐ ह्रीं कालग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोहित' ग्रह विमान में लोहित देव सपरिकर रहते।
विक्रिय से बहुविध तनु धरते जग में विचरण करते।।इन.।।7।।

ॐ ह्रीं लोहितग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कनकदेव' ग्रह के विमान में शाश्वत शोभा न्यारी।
देव देवियों के महलों में पुण्य विभव अति भारी।।इन.।।8।।

ॐ ह्रीं कनकदेवग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नीलदेव' ग्रह के विमान में दिव्य कूट वेदी हैं।
अनुपम रत्नमयी सब रचना मणिमय तट वेदी हैं।।इन.।।9।।

ॐ ह्रीं नीलदेवग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ग्रह विकाल' के विमान आधे गोले सम अति शोभें।
पृथिवी कायिक अनादि अनिधन विमान सुर मन लोभें।।इन.।।10।।

ॐ ह्रीं विकालग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'केश' ग्रहों के विमान अनुपम देव देवियां रहते।
इन विमान की मंद किरण हैं रात्रि में अति चमकें।।इन.।।11।।

ॐ ह्रीं केशग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कवयव' ग्रह के विमान सुंदर भूकायिक चमकीले।
सुरगण विक्रिय भूषा धरते सदा दिव्यसुख ही लें।।इन.।।12।।

ॐ ह्रीं कवयवग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक एक चंद्र के ये ग्रह चंद्र असंख्ये जग में।
अतः 'कनकसंस्थान' ग्रहों के बिंब असंख्ये जग में।।इन.।।13।।

ॐ ह्रीं कनकसंस्थानग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह विमान 'दुंदुभक' देव का मंद किरण से चमके।
देव देवियां रहते उसमें दिव्य विभव इन सबके।।इन.।।14।।

ॐ ह्रीं दुंदुभकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज निज पुण्य उदय से सुरगण इन विमान में जन्में।
देव 'रक्तनिभ' ग्रह विमान में दिव्य सुखों को परणें।।इन.।।15।।

ॐ ह्रीं रक्तनिभग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नीलाभास' ग्रहों के सुंदर देव विमान चलाते।
ज्योतिष में जन्में ये सुर गण जिनवर के गुण गाते।।इन.।।16।।

ॐ ह्रीं नीलाभासग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'अशोक' संस्थान' इन्हों के बहु विमान नभपथ में।
विक्रिय तनु से सुरगण जाते जिनवर कल्याणक में।।इन.।।17।।

ॐ ह्रीं अशोकसंस्थानग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कंस' ग्रहों के विमान अनुपम चमक रहें नभपथ में।
देव देवियों के बहु सुंदर महल बने हैं उनमें।।इन.।।18।।

ॐ ह्रीं कंसग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'रूपनिभ' ग्रह विमान बहु द्वीप असंख्यों तक हैं।
विक्रिय तनु से देव विहरते मूलरूप निज गृह है।।इन.।।19।।

ॐ ह्रीं रूपनिभग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कंसकवर्ण' ग्रहों के सुंदर बने विमान चमकते।
अर्ध गोल इनके समतल पर देव देवियां रहते।।इन.।।20।।

ॐ ह्रीं कंसकवर्णग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'शंखपरिणाम' नाम ग्रह इन विमान नभ पथ में।
ज्योतिषसुरगण क्रीड़ा करते मूल देह निज गृह में।।इन.।।21।।

ॐ ह्रीं शंखपरिणामग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'तिलपुच्छ' विमान असंख्यों द्वीप सागरों तक हैं।
आयु पूर्णकर सुर मर जाते विमान नित स्थिर हैं।।इन.।।22।।

ॐ ह्रीं तिलपुच्छग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

'शंखवर्ण ग्रह' देव विमान, सुर परिवार रहें निधिमान्।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।23।।

ॐ ह्रीं शंखवर्णग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उदकवर्ण' ग्रह शुभ्र विमान, देव देवियों से धनवान्।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।24।।

ॐ ह्रीं उदकवर्णग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पंचवर्ण' ग्रह पुण्यनिधान। देव विमान बने अमलान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।25।।

ॐ ह्रीं पंचवर्णग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'उत्पात' विमान अनिंद। जिनवर बिंब सुरासुर वंद्य।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।26।।

ॐ ह्रीं उत्पातग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धूमकेतु' ग्रह देव विमान। जिनवर बिंब नमें गुणवान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।27।।

ॐ ह्रीं धूमकेतुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तिल' नामक ग्रह देव विमान। देव देवियों से सुखखान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।28।।

ॐ ह्रीं तिलग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नभ' ग्रह देव विमान दिपंत। देव देवियां सुख विलसंत।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।29।।

ॐ ह्रीं नभग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षारराशि' ग्रह देव विमान। नभ पथ में है अधर सुजान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।30।।

ॐ ह्रीं क्षारराशिग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'विजिष्णू' ग्रह गुणवान। ज्योतिषसुर के सुख अमलान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।31।।

ॐ ह्रीं विजिष्णुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदृशदेव' का विभव महान्। ग्रह हो पुण्य ग्रहें सुखदान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।32।।

ॐ ह्रीं सदृशग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'संधि' नाम ग्रह देव विमान। संधिदेव परिवार महान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।33।।

ॐ ह्रीं संधिग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'कलेवर' नाम धरंत। ग्रह होकर विग्रह[1] न करंत।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।34।।

ॐ ह्रीं कलेवरग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'अभिन्न' बहु पुण्य प्रसाद। देव विभव सुख है न विषाद।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।35।।

ॐ ह्रीं अभिन्नग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ग्रंथिविमान' ग्रहों का मान्य। जिन भक्ती भरती धनधान्य।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।36।।

ॐ ह्रीं ग्रंथिग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'मानवक' देव अभिराम। जिनवर भक्त स्वात्म विश्राम।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।37।।

ॐ ह्रीं मानवकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कालक' ग्रह विमान चमकंत। देव देवियां वहां रमंत।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।38।।

ॐ ह्रीं कालकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. कलह।

'कालकेतु' ग्रह जिनवर भक्त, काल महाविकराल नशंत।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।39।।

ॐ ह्रीं कालकेतुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निलय' देव आलय सुखधाम। देव करे जिनबिंब प्रणाम।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।40।।

ॐ ह्रीं निलयग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनय' ग्रहों के देव विनीत। सदाचार से करते प्रीत।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।41।।

ॐ ह्रीं अनयग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्युज्जिह्व' विमान विशाल। सुरगण वंदे जगप्रतिपाल।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।42।।

ॐ ह्रीं विद्युज्जिह्वग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिंह' नाम ग्रह देव प्रसन्न। जिनगुण गावें चित्त प्रसन्न।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।43।।

ॐ ह्रीं सिंहग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अलक' विमान अलौकिक जान। पृथिवी कायिक जीव निदान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।44।।

ॐ ह्रीं अलकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल-शेर

'निर्दुःख' ग्रह विमान में ग्रह देव बसंता।
नाना सुखों को भोगते दुख रोग के हंता।।
इनके असंख्य द्वीप जलधि तक विमान हैं।
उनमें जिनेन्द्रधाम नमूँ सुख निधान हैं।।45।।

ॐ ह्रीं निर्दुःखग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'काल' के विमान में सुरगण निवास हैं।
ये ढाई द्वीप में भ्रमें फिर अचल खास हैं।।
इनके असंख्य द्वीप जलधि तक विमान हैं।
उनमें जिनेन्द्रधाम नमूँ सुख निधान हैं।।46।।

ॐ ह्रीं कालग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'महाकाल' नाम के नहिं दुःख दें कभी।
निज पुण्य पाप उदय से सुख दुख भरें सभी।।इन.।।47।।

ॐ ह्रीं महाकालग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'रुद्र' रौद्र ध्यान से निज को बचावते।
सुर सौख्य भोगते वहां समकित उपावते।।इन.।।48।।

ॐ ह्रीं रुद्रग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह के विमान 'महारुद्र' नाम बहुत से।
ये ज्योतिषी सुर पुण्य विभव भरें वहां पे।।इन.।।49।।

ॐ ह्रीं महारुद्रग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'संतान' नाम ग्रह सुरों के सौख्य घने हैं।
विक्रिय शरीर से भ्रमें जिनभक्त बने हैं।।इन.।।50।।

ॐ ह्रीं संतानग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष विमान 'विपुल' ग्रह आकाश में रहें।
बहु देव देवियां वहाँ आनंद से रहें।।इन.।।51।।

ॐ ह्रीं विपुलग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'संभव' ग्रहों अधिपति संभव हि नाम के।
परिवार सहित रहते जिनभक्ति भावते।।इन.।।52।।

ॐ ह्रीं संभवग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वार्थी' ग्रह देव दिव्य सौख्य भोगते।
जिनबिंब की पूजा करें अति पुण्य योगतें।।इन.।।53।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थीग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये 'क्षेम' ग्रह जगत में क्षेम हेतु विचरते।
जिनभक्ति संस्तवन से क्षेम शब्द उचरते।।इन.।।54।।

ॐ ह्रीं क्षेमग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'चंद्र' नाम के असंख्य मध्य लोक में।
ये चंद्रमा के ही रहें परिवार विश्व में।।इन.।।55।।

ॐ ह्रीं चंद्रग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मंत्र' ग्रह विमान गगन में सुशोभते।
देवों के महल बीच दिव्य कूट शोभते।।इन.।।56।।

ॐ ह्रीं निर्मंत्रग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतीष्मान' यह विमान अभ्र में चमकें।
सुरगण वहां पे जन्मते निज पुण्य से दमकें।।इन.।।57।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्मद्ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दिशसंस्थित' ग्रह के विमान पुण्य से मिलें।
जिनभक्ति के बल से सुरों की मनकली खिले।।इन.।।58।।

ॐ ह्रीं दिशसंस्थितग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं देव 'विरत' नाम के ग्रह जाति में हुये।
ये पाप से विरक्त पुण्य में निरत हुये।।
इनके असंख्य द्वीप जलधि तक विमान हैं।
उनमें जिनेन्द्रधाम नमूँ सुख निधान हैं।।59।।

ॐ ह्रीं विरतग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'वीतशोक' चंद्र के परिवार देव हैं।
जिनराज को 'कुलदेव' मान करें सेव हैं।।इन.।।60।।

ॐ ह्रीं वीतशोकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निश्चल' ग्रहों में जैन धाम शोभते घने।
जो पूजते उनके समस्त पाप को हने।।इन.।।61।।

ॐ ह्रीं निश्चलग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष 'प्रलंब' देव सौख्य दिव्य पावते।
जिनराज वंदना करें निजात्म भावते।।इन.।।62।।

ॐ ह्रीं प्रलंबग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भासुर' ग्रहों के बिंब मंद रश्मि धारते।
जिन भक्ति से भवसिंधु से निज को उबारते।।इन.।।63।।

ॐ ह्रीं भासुरग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह नाम 'स्वयंप्रभ' विमान अभ्र में दिपें।
जो पूजते जिनेन्द्र धाम पुण्य से दिपें।।इन.।।64।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमान 'विजय' ग्रह के दिव्य रत्न से भरे।
वंदे जिनेंद्रबिंब उनके पाप को हरें।।इन.।।65।।

ॐ ह्रीं विजयग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'वैजयंत' के विमान नभ में अधर हैं।
जो पूजते जिनेन्द्रबिंब वो हि अमर हैं।।इन.।।66।।

ॐ ह्रीं वैजयंतग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

'सीमंकर' ग्रह के दिपें, शुभ्र विमान असंख्य।
उनके जिन मंदिर जजूँ, गुण मणि मिले असंख्य।।67।।

ॐ ह्रीं सीमंकरग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अपराजित' ग्रह के यहां, जिन मंदिर अभिराम।
जिनप्रतिमा को पूजहूँ, मिले स्वात्म विश्राम।।68।।

ॐ ह्रीं अपराजितग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'जयंत' के गेह में, जिनगृह सुरगण वंद्य।
नमूँ नमूँ जिनबिंब को, मिले सौख्य अभिनंद।।69।।

ॐ ह्रीं जयंतग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विमल' देव ग्रह मान्य है, मल से रहित शरीर।
इनके जिनगृह को जजूं, मिटे शीघ्र भवपीर।।70।।

ॐ ह्रीं विमलग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभयंकर' ग्रह के यहां, जिनगृह मणिमय कांत।
जिन प्रतिमा अतिसौम्य छवि, नमत बने शिवकांत।।71।।

ॐ ह्रीं अभयंकरग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विकस' नाम के ग्रह यहां, शाश्वत जिनवर गेह।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, जिनपद अतुल सनेह।।72।।

ॐ ह्रीं विकसग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'काष्ठी' ग्रह के गेह में, जिन आलय स्वर्णाभ।
जो पूजें नित भाव से, लहें स्वात्म रत्नाभ।।73।।

ॐ ह्रीं काष्ठीग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विकट' नाम ग्रह के यहाँ, अनुपम निधि जिनधाम।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, शत शत करूँ प्रणाम।।74।।

ॐ ह्रीं विकटग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'कज्जली' ग्रह कहें, पुण्य उदय से होय।
इनके जिनगृह पूजहूँ, करें निजात्म उद्योत।।75।।

ॐ ह्रीं कज्जलीग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्निज्वाल' ग्रह गेह में, मणिमय जिनवर सद्म।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले शीघ्र शिवसद्म।।76।।

ॐ ह्रीं अग्निज्वालग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'अशोक' के गेह में, शोकरहित जिनगेह।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, जिनवर में धर नेह।।77।।

ॐ ह्रीं अशोकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'केतु' महाग्रह लोक में, इनके जिनवर धाम।
ग्रह अरिष्ट सब दूर हों, पूजूँ विश्व ललाम।।78।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षीरस' ग्रह के बिंब में, जिनवर भवन अनूप।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले स्वात्म चिद्रूप।।79।।

ॐ ह्रीं क्षीरसग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अर्घ' ग्रह के जिनराज गृह, करें सर्व अघ नाश।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले सुज्ञान प्रकाश।।80।।

ॐ ह्रीं अर्घग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रवण' महाग्रह के यहां, जिनवर भवन विशाल।
जो पूजें वे सुख लहें, छुटें सर्व जंजाल।।81।।

ॐ ह्रीं श्रवणग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'जलकेतु' विमान में, शाश्वत जिनवर धाम।
ग्रह अरिष्ट के नाशने, कोटी कोटि प्रणाम।।82।।

ॐ ह्रीं जलकेतुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'केतु' विमानों में दिपें, जिनमंदिर मणिमंत।
जो पूजें वो शिव लहें, निज गुणमणि विलसंत।।83।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह 'अंतरद' विमान में, जिनप्रतिमा राजंत।
मैं पूजूं नितभाव से, स्वपर ज्ञान भासंत।।84।।

ॐ ह्रीं अंतरदग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'एक संस्थान' ग्रह, इनके ग्रह जिनगेह।
मैं पूजूँ नितभाव से, करूँ मुक्ति से नेह।।85।।

ॐ ह्रीं एकसंस्थानग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अश्व' नाम ग्रह बिंब में, जिन प्रतिमा राजंत।
जो पूजें उन रोग दुख, क्षण में ही भागंत।।86।।

ॐ ह्रीं अश्वग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'भावग्रह' के यहां, जिन मंदिर सुखधाम।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले निजातम धाम।।87।।

ॐ ह्रीं भावग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'महाग्रह' बिंब में, जिन मंदिर अभिराम।
महा मोक्ष फल हेतु मैं, करूँ अनंत प्रणाम।।88।।

ॐ ह्रीं महाग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

प्रत्येक चंद्र के अट्ठासी ग्रह परिकर देव कहाये हैं।
नरलोक में इक सौ बत्तिस शशि के ग्रह गिनती में आये हैं।।
ग्यारह हजार छह सौ सोलह इन सब में ही जिन मंदिर हैं।
नरलोक बाह्य ग्रह असंख्यात उन सब जिन गृह को वंदन है।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्यातग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति जिन मंदिर में जिन प्रतिमायें, इक सौ आठ विराजें हैं।
ये शाश्वत रत्नमयी सुंदर वंदन से पातक भाजे हैं।।
जिनबिंब पास में श्रीदेवी श्रुतदेवी मूर्तिमयी शोभें।
सर्वाण्ह व सानत्कुमार यक्ष मूर्ती सुरगण का मन लोभें।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्यातग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयेषु विराजमान-संख्यातीतजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं ज्योतिर्वासिदेवविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

ग्रह विमान के मध्य में, दिव्य कूट विलसंत।
उस पर शाश्वत जिनभवन, नमूँ नमूं सुखवंत।।1।।

शंभु छंद

इसचित्रा भू से आठशतक, अट्ठासी योजन पर नभ में।
बुध ग्रह रहते इससे ऊपर, ग्रह शुक्र गुरू मंगल शनि हैं।।

इन पाँचों के अतिरिक्त तिरासी, ग्रह विमान नभ में ही हैं।
ये बुध अरु शनि के अंतराल में, सदा रहें नित भ्रमते हैं।।2।

राहु केतू ग्रह के विमान, कुछ कम चउ सहस मील के हैं।
ये चंद्र सूर्य से बड़े कहे, इनके नीचे ही चलते हैं।।
इनकी ही गति से शशि रवि के, छह-छह महिने में बिंब ढकें।
इसको ही ग्रहण कहें श्रुत में, दीक्षादिक कार्य न हों इसमें।।3।।

इन ग्रह के आठ हजार देव, वाहन जाती के होते हैं।
केहरि गज वृषभ अश्व विक्रिय, धरके चउ दिश में जुतते हैं।।
सुर होकर भी पशु रूप धरें, जीवन भर वाहन बने रहें।
जो नर गुरु का अविनय करते, वे तप से वाहन गती लहें।।4।।

जो निज चारित्र मलिन करते, बहुविध मिथ्या तप करते हैं।
जिनधर्म की आसादन करते, वे ही ज्योतिष सुर बनते हैं।।
वहं जाकर जिन महिमादि देख, सम्यक्त्व ग्रहण कर सकते हैं।
फिर नर हो मुनि बन तप करके, निजआत्म सुधारस चखते हैं।।5।।

बुध शुक्र गुरू मंगल व शनी, राहू केतू ये ग्रह माने।
शशि रवि दो को भी गिन लीजे, ये नवग्रह हैं सब जग जाने।।
जो ग्रह के जिनगृह नित पूजें, उनको ग्रह कष्ट न दे सकते।
जो इनकी जिन प्रतिमा वंदे, नवग्रह उनको अभीष्ट फलते।।6।।

जिनभक्ति अकेली ही जन के, सब ग्रह अनुकूल बना देती।
जिनभक्ति अकेली ही जन को, दुर्गति से शीघ्र बचा लेती।।
जिनभक्ति अकेली ही जन के, तीर्थंकर आदि पुण्य पूरे।
जिनभक्ति अकेली ही जन को, शिवसुख देकर भव दुख चूरे।।7।।

मैं नमूँ अनंतों बार प्रभो! मेरे सब दुःख विनाश करो।
मैं नमूँ अनंतो बार प्रभो! मुझ में निजज्ञानप्रकाश भरो।।
मैं नमूँ अनंतो बार प्रभो! सम्यग्दर्शन अक्षय कीजे।
बस 'ज्ञानमती' पूरी होने तक, चरण शरण में रख लीजे।।8।।

दोहा

जय जिनगृह चिंतामणी, चिंतित फलदातार।
एक मुक्ति के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्यातग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य जैन ज्योतिर्विमान की, जिनप्रतिमा को यजते हैं।
वे सर्व अमंगल दोष दूर कर, नित नव मंगल भजते हैं।।
गुणमणि यश से इस भूतल पर, निज को आलोकित करते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, तिहुंलोक प्रकाशित करते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-5
नक्षत्र जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

एकेक शशि के नखत अट्ठाईस नभ में चमकते।
सब अर्ध गोलक सदृश निचले भाग से ही दमकते।।
इन सब विमानन मध्य स्वर्णिम कूट पर जिनधाम हैं।
पूजूँ जिनेश्वर बिंब मैं आह्वान कर इत ठाम हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-वसंततिलका छंद

गंगा नदी जल भरा कनकाभ झारी।
धारा करूँ त्रय जिनेश्वर पाद में मैं।।
नक्षत्र के जिननिकेतन नित्य पूजूँ।
स्वामिन्! अनंत भव दुःख हरो अभी ही।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर संग घिस चंदन गंध लाया।
पादारविंद प्रभु के चर्चूं अभी मैं।।नक्षत्र.।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान धवलाक्षत पुंज धारूँ।
मेरा अखंड पद नाथ मिले मुझे अब।।नक्षत्र.।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब सुरभी करते दशों दिक्।
पादारविंद जिनके अर्पण करूँ मैं।।नक्षत्र.।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

फेनी सुहाल गुझिया बरफी बनाके।
हे नाथ! अर्पण करूँ क्षुध रोग नाशो।।नक्षत्र.।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जलती हरती अंधेरा।
हे नाथ! आरति करूँ निज ज्ञान चमके।।नक्षत्र.।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ सुगंध वर धूप सुअग्नि में मैं।
संपूर्ण कर्म झट भस्म बनें न दुख दें।।नक्षत्र.।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अनार वर द्राक्ष बदाम लेके।
अर्पूं तुम्हें सब मनोरथ पूर्ण कीजे।।नक्षत्र.।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ भर थाल चढ़ाय देऊँ।
मेरा अनर्घ पद नाथ मुझे दिलादो।।नक्षत्र.।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्म साम्राज्य, त्रिभुवन में सुखशांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

सब नक्षत्र विमान में, जिनगृह जिनवर बिंब।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, मिटे सर्व छल डिंभ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

कृत्तिका नक्षत्र के छह तारे, इनका आकार वीजना सम।
परिवार तारका सहित सभी, छह हजार छह सौ बहत्तरम्।।
इन सबमें जिनमंदिर शाश्वत, वंदन से सारे पाप हरें।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, वे निज आतम संपत्ति भरें।।1।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतकृत्तिकानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोहिणी नखत के पण तारे, गाड़ी की उद्धिका समाकार।
परिवार तारका सहित सकल, पचपन सौ साठ सुश्रुताधार।।इन.।।2।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतरोहिणीनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृगशीर्षा के त्रय तारा हैं, मृग के शिर सम आकार धरें।
तेतीस सौ छत्तिस सब तारे, ये सब विमान अकृत्रिम खरे।।इन.।।3।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतमृगशीर्षानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्द्रा नक्षत्र के इक तारा, दीपक समान आकार धरे।
सब तारे ग्यारह सौ बारह, ज्योतिष विमान की मंद करें[1]।।इन.।।4।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतआर्द्रानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उडु पुनर्वसू के छह तारा, तोरण समान आकार कहा।
छयासठ सौ बहत्तर सब तारे, चमकें विमान ये अधर अहा।।इन.।।5।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतपुनर्वसुनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. किरणें।

नक्षत्र पुष्य के त्रय तारा, आकार छत्र सदृश कहे।
सब तारे तेतिस सौ छत्तिस, इनके विमान अति चमक रहें।।इन.।।6।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतपुष्यनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्लेषा छह तारा संयुत, बांमी की शिखा सदृश मानें।
तारे छयासठ सौ बाहत्तर, परिवार समेत मुनी जानें।।इन.।।7।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतआश्लेषानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उडु मघा चार तारा संयुत, गोमूत्र पंक्ति आकार धरें।
चौवालिस सौ अड़तालिस सब, तारे निशि में सुप्रकाश करें।।इन.।।8।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतमघानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वा फाल्गुनि के दो तारे, आकार बाण सम तुम जानो।
बाइस सौ चौबिस सब तारे, इनमें जिन प्रतिमा सरधानों।।इन.।।9।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतपूर्वाफाल्गुनिनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरा फाल्गुनी दो तारे, आकार कहा युग सम नभ में।
बाइस सौ चौबिस सब तारे, इनके विमान गगनांगण में।।इन.।।10।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतउत्तराफाल्गुनिनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नक्षत्र हस्त पांच तारा, आकार हाथ सम तुम जानों।
पचपन सौ साठ सकल तारे, इनमें जिन प्रतिमा सरधानों।।इन.।।11।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतहस्तनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्रा नक्षत्र का इक तारा, आकार नील पंकज सम है।
ग्यारह सौ बारह सब तारे, भूकायिक धातु विनिर्मित हैं।।इन.।।12।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतचित्रानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वाती नक्षत्र का इक तारा, दीपक सम अतिशय शोभ रहा।
ग्यारह सौ बारह सब तारे, बहु देवी देव निवास वहाँ।।इन.।।13।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतस्वातिनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नक्षत्र विशाखा चउ तारे, अधिकरण सदृश आकार धरें।
चौवालिस सौ अड़तालिस सब, तारे बहु मंद प्रकाश करें।।इन.।।14।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतविशाखानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुराधा के छह तारे ये, मोती माला आकार धरें।
छयासठ सौ बाहत्तर तारे, परिवार देवनित वास करें।।इन.।।15।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतअनुराधानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठा नक्षत्र के त्रय तारे, ये वीणा शृंग समान कहे।
तेतिससौ छत्तिस सब तारे, परिवार देव इन मध्य रहें।।इन.।।16।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतज्येष्ठानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नक्षत्र मूल के नौ तारे, बिच्छू समान आकार धरें।
दस सहस आठ सब तारे हैं, आधे गोलक सु विमान धरें।।इन.।।17।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतमूलनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वाषाढ़ा के चउ तारे, दुष्कृत वापी आकार धरें।
चौवालिस सौ अड़तालिस सब, तारे ये मंदप्रकाश करें।।इन.।।18।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतपूर्वाषाढानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्राषाढा के चउ तारे, ये सिंह कुंभ सम माने हैं।
चौवालिस सौ अड़तालिस सब, तारे ये मंद प्रकाशे हैं।।इन.।।19।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतउत्तराषाढानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिजित् नक्षत्र के त्रय तारे, हाथी के शिर सम दिखते हैं।
तेतिस सौ छत्तिस सब तारे, इनके विमान ही दिखते हैं।।इन.।।20।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतअभिजित्नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नक्षत्र श्रवण के त्रय तारे, आकार मृदंग समान धरें।
तेतिस सौ छत्तिस सब तारे, शाश्वत हैं इन में देव भरें।।इन.।।21।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतश्रवणनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नक्षत्र धनिष्ठा पण[1] तारे, गिरते पक्षी सम दिखते हैं।
पचपन सौ साठ सर्व तारे, ये जन मन प्रमुदित करते हैं।।इन.।।22।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतनिष्ठानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतभिषज नखत इक सौ ग्यारह, तारे ये सैन्य सदृश दिखते।
इक लाख सु तेइस सहस चार सौ बत्तिस सब तारे दिपते।।इन.।।23।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतशतभिषक्नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उडुपूर्वा भाद्रपदा के दो, तारे गज पूर्व शरीर समा।
बाइससौ चौबिस सब तारे, नभ में रात्रि में चमक घना।।इन.।।24।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतपूर्वाभाद्रपदनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरा भाद्रपद दो तारे, हाथी के पूर्व शरीर सदृश।
बाइस सौ चौबिस सब तारे, नभ में चमचमते सभी नखत।।इन.।।25।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतउत्तराभाद्रपदनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रेवति उडु के बत्तिस तारे, ये नाव समान दिखें नभ में।
पैंतिस हजार अरु पाँच शतक, चौरासी सब तारे गिनने।।इन.।।26।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतरेवतीनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. पांच।

अश्विनी नखत के पाँच तारका, घोड़े के शिर सम दिखते।
पचपन सौ साठ सभी तारे, रात्री में किंचित तम हरते।।इन.।।27।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतअश्विनीनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरणी नक्षत्र त्रय तारा युत, चूल्हे के सम नभ में दिखते।
तेतिस सौ छत्तिस सब तारे, रात्रि में मंद मंद चमकें।।इन.।।28।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतभरणीनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सब नखत सूर्य के गमन क्षेत्र, में ही नित विचरण करते हैं।
ढाई द्वीपों के बाहर के, नक्षत्र गमन नहिं करते हैं।।
नर लोक मध्य इक सौ बत्तिस, शशि के छत्तिस छ्यानवे हैं।
इस आगे संख्यातीत नखत, सबमें जिनगृह को वंदन है।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्यातनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक नखत के छह आदि, मूल तारा बतलाये हैं।
ग्यारह सौ ग्यारह से गुणिते, परिकर तारा कहलाये हैं।।
इन सब ताराओं की संख्या, इस मध्य लोक में असंख्य हैं।
सब के विमान में जिन मंदिर, ये मुनिगण से भी वंदित हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कृत्तिकादिनक्षत्रसम्बन्धिमूलतारापरिवारतारांविमानस्थितसंख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबही नक्षत्र विमानों में, समतलपर दिव्य कूट शोभें।
परिवार तारका के विमान उनमें भी दिव्य कूट शोभें।।
इनपर जिनमंदिर बने हुये जिन प्रतिमा इक सौ आठ-आठ।
इन सब असंख्य जिनप्रतिमा को पूजत हो मंगल ठाठ-वाट।।3।।

ॐ ह्रीं असंख्यातनक्षत्रसंख्यातपरिवारतारकाविमानस्थितजिनालयेषु विराजमान संख्यातीतजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं ज्योतिर्वासिदेवविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

सब नक्षत्र विमान में, पद्मासन जिनबिंब।
नमूँ नमूँ नत शीश मैं, हरो सकल जग दंभ।।1।।

चाल-शेर

जय जय जिनेन्द्र धाम सर्व पाप हरंता।
जय जय जिनेन्द्र धाम श्रेष्ठ पुण्य भरंता।।
जय जय जिनेन्द्र बिंब रत्न मणिमयी बनें।
चेतन इन्हें नमें स्वयं चिन्मूर्ति परिणमें।।2।।

नक्षत्र के विमान पृथिवी काय धातु के।
एकेंद्रि जीव इनमें जन्म धारते मरते।।
इन जीव के उद्योत नाम कर्म उदय से।
ये बिंब नित्य चमकते हैं शीश किरण से।।3।।

इनके हैं चउ हजार देव विक्रिया करें।
सिंहादि रूप धार के वाहन बना करें।।
ये अल्प पुण्य से यहां नित क्लेश धारते।
सम्यक्त्व यदि मिले तो चित्त शांति पावते।।4।।

सम्यक्त्व की महिमा अचिन्त्य पार नहीं है।
सम्यक्त्व के बिना जगत की पार नहीं है।।
सम्यक्त्वरत्न शीघ्र मुक्ति प्राप्त करावे।
सम्यक्त्वरत्न आत्म सुधापूर पिलावे।।5।।

जो नित्य इन विमान के जिनगेह वंदते।
वे निज अनंत गुण से स्वयं को हि मंडते।।
वे मोह को यमराज को भि खंड खंडते।
बस तीन रत्न से हि स्वयं स्वात्म मंडते।।6।।

देवाधिदेव! आपकी मैं वंदना करूँ।
सम्यक्त्वरत्न ना छुटे ये प्रार्थना करूँ।।
बस बार बार इसी हेतु अर्चना करूँ।
'सुज्ञानमती' पूर्ण करो याचना करूँ।।7।।

घत्ता

जय ज्योतिषि जिनगृह, हरत अशुभ ग्रह, नवग्रह सुरगण तुम पूजें।
जिन वंदत नव ग्रह, होते शुभ ग्रह, मिलता निजगृह जिन पूजें।।8।।

ॐ ह्रीं असंख्यातग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य जैन ज्योतिर्विमान की, जिनप्रतिमा को यजते हैं।
वे सर्व अमंगल दोष दूर कर, नित नव मंगल भजते हैं।।
गुणमणि यश से इस भूतल पर, निज को आलोकित करते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, तिहुंलोक प्रकाशित करते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-6

प्रकीर्णक तारक जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

एकेक शशि के प्रकीर्णक, तारे चमकते गगन में।
छ्यासठ सहस नौ सौ पचहत्तर कोटिकोटी अधर में।।
ये अर्ध गोलक सम इन्हों के, मध्य ऊँचे कूट हैं।
उन पर जिनेश्वर धाम पूजूँ, जैन प्रतिमा युक्त हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकताराविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकताराविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकताराविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-स्रग्विणी छंद

स्वात्म का साम्यरस नाथ दीजे मुझे।
नीर से पाद मे तीन धारा करूँ।।
तारका बिंब की जैन प्रतिमा जजूँ।
स्वात्म चैतन्य चिन्मूर्ति पाऊँ अबे।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्मसौरभ मिले चित्त उसमें रमें।
गंध से आप के पाद चर्चन करूँ।।तारका.।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान अक्षय बनें नाथ! कीजे कृपा।
शालि के पुंज से पूजहूँ भक्ति से।।तारका.।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सौख्य पीयूष पीऊँ सुतृप्ती मिले।
पुष्प मंदार माला चढ़ाऊँ तुम्हें।।तारका.।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भूख व्याधी मिटा दो प्रभो! मूल से।
मैं चढ़ाऊँ तुम्हें खीर लाडू अबे।।तारका.।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंधेर से आत्म निधि ना मिले।
आरती मैं करूँ ज्ञान ज्योती भरो।।तारका.।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊं सुगंधी उड़े लोक में।
स्वात्मगुण गंध फैले प्रभो! शक्ति दो।।तारका.।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्म की संपदा दीजिये हे प्रभो।
आम्र अंगूर फल को चढ़ाऊँ तुम्हें।।तारका.।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ अर्पण करूँ स्वात्मपद के लिये।
नाथ! पूरो हमारी सभी कामना।।तारका.।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्म साम्राज्य, त्रिभुवन में सुखशांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

ताराओं के बिंब में, जिनवर बिंब अनूप।
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले निजातमरूप।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

जंबूद्वीप में दो शशि के परिवार तारका जोड़ी।
इक लख तेतिस हजार नवसौ पचास कोड़ा कोड़ी।।
नभ में टिम टिम करते मेरु प्रदक्षिणा करते हैं।
इनमें सब जिनमंदिर पूजूँ ये भव दुःख हरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वयचन्द्रपरिवारएकलक्षत्रयस्त्रिंशत्सहस्रनवशतपंचाशतकोटि-कोटिताराविमानस्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो लख सड़सठ हजार नव सौ कोड़ा कोड़ी तारे।
लवणोदधि के चार चंद्र के ये परिकर टिमकारें।।इन.।।2।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिचतुश्चन्द्रपरिवारद्विलक्षसप्तषष्टिसहस्रनवशतकोटि-कोटिताराविमानस्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकि खंड के बारह शशि के चमकें परिकर तारे।
आठ लाख त्रय सहस सात सौ कोड़ाकोड़ी सारे।।इन.।।3।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वादशचन्द्रपरिवारअष्टलक्षसहस्रसप्तशतकोटि-कोटिताराविमानस्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कालोदधि में अट्ठाइस लख बारह हजार पुनरपि।
नव सौ पचास कोड़ा कोड़ी तारे चमकें नितप्रति।।इन.।।4।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिद्विचत्वारिंशत् शशिपरिवारअष्टाविंशतिलक्षद्वादश-सहस्रनवशतपंचाशतकोटिकोटिताराविमानस्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध में अड़तालिस लख बाइस हजार दो सौ।
कोड़ाकोड़ी तारे चमकें इनमें सुर हैं सुख सों।।इन.।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थद्विसप्ततिचन्द्रपरिवारअष्टचत्वारिंशल्लक्षद्वाविंशति-सहस्रद्विशतकोटिकोटिताराविमानस्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम से लेकर अंतिम द्वीपोदधि तक।
चंद्र असंख्य उनके परिकर तारे असंख्य चकमक।।
ये सब स्थिर रहें न चलते मंद प्रकाश करे हैं।
इनके संख्यातीत जिनालय पूजत पाप हरे हैं।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपात्अंतिमस्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतअसंख्यातचन्द्रपरिवार-संख्यातीततताराविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्रुवतारा जिनालय के अर्घ्य

जंबूद्वीप में ध्रुव तारा है छत्तिस स्थिर नभ में।
अर्ध गोल सम इनमें अतिशय दिव्य कूट हैं मधि में।।
इन पर जिन मंदिर अकृत्रिम मणिमय रत्नमयी हैं।
उनमें जिन प्रतिमायें अनुपम पूजत सौख्य मही हैं।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थषट्त्रिंशत्ध्रुवताराविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लवणोदधि में इक सौ उनतालिस ध्रुव तारे चमकें।
इन विमान के ठीक मध्य में तुंग कूट स्वर्णिम के।।इन.।।8।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिएकशतएकोनचत्वरिंशत्ध्रुवताराविमानस्थितजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकिखंड में इक हजार दश ध्रुवतारा नित चमकें।
ये विमान शाश्वत भू कायिक दिव्य कूट से दमकें।।इन.।।9।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थएकसहस्रदशध्रुवताराविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इकतालिस हजार एक सौ बीस कहे ध्रुव तारे।
कालोदधि में ये नित चमकें तुंगकूट से प्यारे।।इन.।।10।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिएकचत्वारिंशत्सहस्रएकशतविंशतिध्रुवताराविमानस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध में त्रेपन हजार दो सौ तीस सु तारे।
ये ध्रुवतारे इनके मधि में कूट दिव्य मनहारे।।इन.।।11।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थत्रिपंचाशत्सहस्रद्विशतत्रिंशत्ध्रुवताराविमानस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभुछंद

अट्ठासी लाख चालिस हजार सात सौ कोड़ाकोड़ी[1] ये।
सब तारे मनुज लोक में हैं इस आगे संख्यातीत भये।।
पंचानवे सहस पाँच सौ पैंतिस ध्रुव तारे नरलोक में हैं।
इन सबके जिन मंदिर पूजूँ ये आत्मशुद्धि में कारण हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्याततारविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति ज्योतिष गृह में जिन मंदिर, प्रति जिनगृह में जिनप्रतिमायें।
हैं इक सौ आठ-आठ मणिमय, शाश्वत प्रतिमायें मन भायें।।
प्रति प्रतिमा सन्निध द्रव्य मंगल हैं, आठ सु इक सौ आठ-आठ।
मंगल घट मुक्तामालादिक, जिनप्रतिमा वंदत भरें ठाठ।।2।।

ॐ ह्रीं असंख्याततारविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयेषु विराजमानसंख्यातीत जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं ज्योतिर्वासिदेवविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

1. तिलोयपण्णत्ति पृ. 760।

जयमाला

गीता छंद

जय जय जिनेश्वर देव तुमने, घातिकर्म विनाशिया।
जय जय जिनेश्वर देव तुमने, सर्व दोष विघातिया।।
जय जय जिनेश्वर देव तुमको, इंद्र शत मिल वंदते।
जय जय जिनेश्वर देव तुम, प्रतिमा मुनी भी वंदते।।1।।

ज्योतिष सुरों में तारका, सब से प्रथम आकाश में।
सबसे जघन्य विमान इनके, मील द्विशत पचास में।।
इनके सुवाहनदेव दो हज्जार चउदिश में जुते।
ये बिंब मंद सुमंद किरणों, से उजेला कर सकें।।2।।

हैं गमन में शशि मंद उनसे, शीघ्रगामी सूर्य हैं।
ग्रह शीघ्रतर चलते उन्होंसे, शीघ्रतर नक्षत्र हैं।
इनसे अधिक भी शीघ्रतर, ये तारका गण विचरते।
नर लोक से आगे सभी, तारे गमन नहिं कर सकें।।3।।

इस प्रथम जम्बूद्वीप में दो, चंद्र परिकर तारका।
इस भरत में हैं सातसौ पण[1] कोड़ि कोड़ी तारका।।
हिमवत् पे चौदह सौ दशे, तारे सु कोड़ा कोड़ि हैं।
ये क्षेत्र[2] पर्वत से द्विगुण, वीदेह तक फिर अर्ध हैं।।4।।

इन बिंब के मधि कूट पर, जिनगेह शाश्वत शोभते।
उनके चतुर्दिश महल में सब, देव देवी राजते।।
इन देव की उत्कृष्ट आयू, पाव पल्य सुख्यात है।
तनु तुंग सात धनुष कहा, विक्रिय तनू बहु भांति है।।5।।

ताराओं के जिनधाम में, जिनबिंब इकसौ आठ हैं।
विध आठ मंगलद्रव्य प्रत्येक इकसौ आठ हिं आठ हैं।।
बहु धूप घट मंगल घड़े, मालयों मोती स्वर्ण की।
चंदवा चंवर छत्रादि तोरण, ध्वज पताका शोभतीं।।6।।

1. पांच। 2. आगे हैमवत् क्षेत्र में दूने, इससे दूने महाहिमवान् पर, इससे दूने हरिक्षेत्र में, इससे दूने निषध पर, इससे दूने विदेह क्षेत्र में पुनः आगे पर्वत क्षेत्रों में आधे-आधे होते हुए ऐरावत क्षेत्र में 705 कोड़ाकोड़ी तारे हैं।

वर धूप घट में अग्नि शाश्वत, जल रही जिन गेह में।
खेवें सुगंधित धूप सुरगण, धुआं फैले अभ्र में।।
सब देव गण अति भक्ति से, जिन देव अर्चन कर रहे।
वीणा मृदंगी बांसुरी, संगीत नर्तन कर रहे।।7।।

ये देव पंच कल्याण में, आते महात्म्य विलोकते।
देवर्द्धिदर्शन आदि से, मिथ्यात्व कर्म विलोपते[1]।।
सम्यक्त्वनिधि को पाय कर, संसार छोटा कर रहे।
जिन भक्ति में अति मग्न हो, जिन आत्म संपति भर रहे।।8।।

मिथ्या तपस्या आदि से, ज्योतिष सुरों में जन्म हो।
सम्यक्त्वनिधि को पायके, फिर श्रेष्ठ मानव जन्म हो।।
मुनि व्रत धरें शुचि तप करें, निर्वाण लक्ष्मी को वरें।
सम्यक्त्व रत्न महान यह, जिन भक्ति से अर्जन करें।।9।।

हे नाथ! आप प्रसाद से, सम्यक्त्व मेरा दृढ़ रहे।
जब तक नहीं हो मोक्ष तब तक, आपमें मन रमि रहे।।
प्रभु अंतक्षण तक आप का नाम स्मरण हो कंठ में।
बस 'ज्ञानमती' हो पूर्ण तब तक, रहूँ जिनवर पंथ में।।10।।

दोहा

ताराओं के जिन भवन, हैं असंख्य परिमाण।
नमूँ अनंतों बार मैं झुक झुक करूँ प्रणाम।।।11।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्याततारविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य जैन ज्योतिर्विमान की, जिनप्रतिमा को यजते हैं।
वे सर्व अमंगल दोष दूर कर, नित नव मंगल भजते हैं।।
गुणमणि यश से इस भूतल पर, निज को आलोकित करते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, तिहुंलोक प्रकाशित करते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः।।

1. नष्ट करते हैं।

प्रशस्ति

ज्योतिर्लोकविमानेषु, संख्यातीत जिनालयाः।
नमाम्यनंतशः सर्वान्, स्वात्मज्योतिः दिशन्तु मे।।1।।

नवत्रिपंचद्वयंकेऽस्मिन् वीराब्दे चैत्रशुक्लके।[1]
ज्योतिर्लोकविधानं हि, पंचम्यां पूर्यते मया।।2।।

गणिनीज्ञानमत्येयं, संकलिता कृतिर्भुवि।
हरेदमंगलं नित्यं , सर्वेषां मंगलं क्रियात्।।3।।

आचन्द्रतारकं स्थेयात्, विधानं क्षेमकृद् भवेत्।
कर्तृभ्यः कारकेभ्यश्च, दद्यात् सौख्यमहर्निशम्।।4।।

ग्रहाः सर्वेऽनुकूलाः स्युः, अनिष्टं न भवेदिह।
अकृत्रिमजिनागाराः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।5।।

।।इति ज्योतिर्लोकजिनालयविधानम् संपूर्णम्।।

। जैनं जयतु शासनम् ।

1. वीर निर्वाण संवत् 2539 चैत्र शु. 5 को विधान पूर्ण हुआ।

ज्योतिर्लोक जिनालय विधान की आरती

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-बार बार तोहे क्या समझाऊँ.....

ज्योतिर्लोक जिनालय की हम, करें आरती आज।
असंख्यात जिनबिम्बों की, भक्ती करेगी भव से पार।।टेक.।।

इस पृथ्वी से सात शतक, नब्बे योजन ऊपर हैं।
रवि शशि ग्रह नक्षत्र व तारे, पाँच ज्योतिषी सुर हैं।।
उन सबके विमान में मंदिर, बने वहाँ सुखकार।
असंख्यात जिनबिम्बों की, भक्ती करेगी भव से पार।।1।।

जो नर सम्यग्दर्शन बिन, तप करके पुण्य भरे हैं।
बनकर ज्योतिष देव, वहाँ सम्यक्त्व भी पा सकते हैं।।
दिन औ रात इन्हीं से होते हैं, धरती पर आज।
असंख्यात जिनबिम्बों की, भक्ती करेगी भव से पार।।2।।

ज्योतिर्लोक जिनालय का यह, है विधान सुखकारी।
आरति से ''चन्दनामती'', मिल जावे ज्योति निराली।।
रत्नत्रय की निधि मिल जावे, यही भावना आज।
असंख्यात जिनबिम्बों की भक्ती करेगी भव से पार।।3।।

सम्मेदशिखर चालीसा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

दोहा

सिद्धिप्रिया की प्राप्ति हित, नमन करूँ सब सिद्ध।
क्रम से भव को काटकर, होऊँ पूर्ण समृद्ध।।1।।
सिद्धक्षेत्र शाश्वत कहा, गिरि सम्मेद महान।
जहाँ अनन्तानंत प्रभु, ने पाया शिवधाम।।2।।
सम्मेदाचल तीर्थ का, चालीसा सुखकार।
पढ़ें सुनें जो भव्यजन, क्रम से हों भव पार।।3।।

चौपाई

जय हो श्री सम्मेद शिखर की, जय हो उस शाश्वत गिरिवर की।।1।।
हों जयवन्त बीस ये जिनवर, सिद्ध बने थे जो तीर्थंकर।।2।।
इस हुण्डावसर्पिणी युग में, चार जिनेश्वर अन्य स्थल से।।3।।
मोक्ष प्राप्त कर सिद्ध बन गए, वे तीरथ भी पूज्य बन गए।।4।।
लेकिन भूत भावि कालों में, यहीं से मुक्त हुए अरु होंगे।।5।।
यही अटल सिद्धान्त नियम है, सिद्धिवधू का यह उपवन है।।6।।
कोड़ाकोड़ि मुनीश्वर आते, इस पर्वत पर ध्यान लगाते।।7।।
टोंक-टोंक से मोक्ष पधारे, घाति अघाती कर्म विडारे।।8।।
इसीलिए गिरि की रजपावन, है वहाँ का कण-कण मनभावन।।9।।
यात्रा यद्यपि बहुत कठिन है, यात्री होता फिर भी धन्य है।।10।।
थक थककर भी चढ़ जाता है, अपनी मंजिल पा जाता है।।11।।
पार्श्वनाथ की टोंक पे जाकर, प्रभु के सम्मुख शीश झुकाकर।।12।।
जन्म सफल कर लेता मानव, दूर हटें दुर्गति के दानव।।13।।

मन्दिर कई बने पर्वत पर, जिनमें इक प्रसिद्ध जलमन्दिर।।14।।
थका पथिक कुछ देर बैठकर, करता है विश्राम वहाँ पर।।15।।
फिर यात्रा पर चल देता है, यात्रा का फल वर लेता है।।16।।
पर्वत का प्राकृतिक दृश्य भी, बड़ा मनोरम सुखद सत्य ही।।17।।
सीता नाला है इक झरना, जहाँ एक क्षण सबको रुकना।।18।।
शीतल जल से पग धो लेना, यदि शक्ती वापस हो लेना।।19।।
एक ओर गन्धर्व है नाला, बहता झर-झर झरना प्यारा।।20।।
उतर-उतर कर यात्री आते, स्वल्पाहार प्रसाद को पाते।।21।।
बच्चे-बूढ़े सब लेते हैं, दान स्वरूप द्रव्य देते हैं।।22।।
एक वन्दना करके भी वे, तीन, पाँच, नौ भी कर लेवें।।23।।
शतक सहस्र वन्दना वाले, कुछ मुनि श्रावक भक्त बखाने।।24।।
उनकी काया सुदृढ़ बनी है, भावों की माया सुघनी है।।25।।
इस पर्वत की महिमा न्यारी, कही पूर्व ऋषियों ने भारी।।26।।
एक बार वन्दे जो कोई, तांहि नरक पशुगति नहिं होई।।27।।
भव्यजीव ही जा सकते हैं, पर्वत वन्दन कर सकते हैं।।28।।
नहिं अभव्य पर्वत चढ़ सकते, शास्त्र जिनागम ऐसा कहते।।29।।
मोक्षगमन की शक्ति जहाँ है, भव्य शक्ति का वास वहाँ है।।30।।
चाहे वह कितने ही भव में, कर्मनाश कर पहुंचे शिव में।।31।।
किन्तु अभव्य न शिवपद पाते, निज अभव्य शक्ति के नाते।।32।।
ये परिणामिक भाव जीव के, होते हैं स्वयमेव जीव में।।33।।
वर्तमान में भी वह तीरथ, जिनमत की कहता है कीरत।।34।।
पर्वत के नीचे भी मंदिर, बने अनेकों अद्भुत सुन्दर।।35।।
कई धर्मशालाएं भी हैं, यात्री को सुविधाएं भी हैं।।36।।
श्रावण सुदि सप्तमि का मेला, होता है वहां खूब रंगीला।।37।।

होली पर भी मधुबन जाना, होली का देखो नजराना।।38।।
सांवरिया का नाम पुकारो, पारस का जयकार उचारो।।39।।
तुम भी पारस बन जाओगे, भक्ती का रस पा जाओगे।।40।।

शंभु छंद

चालिस दिन तक जो करे, नित चालीसहिं बार।
मिले सहस उपवास फल, सुख सम्पत्ति अपार।।1।।

गणिनी माता ज्ञानमति, बालसती विख्यात।
उनकी शिष्या चन्दनामती रचित यह पाठ।।2।।

सुगन्ध दशमी भाद्रपद, की तिथि है सुप्रसिद्ध।
वीर संवत् पच्चीस सौ, तेइस की कृति सिद्ध।।3।।

जब तक गिरि सम्मेद का, जग में रहे प्रकाश।
चालीसा यह तीर्थ का, तन मन करे विकास।।4।।

सिद्धों की उस श्रेणी में, आए मेरा नाम।
सिद्धक्षेत्र की भक्ति से, मिले मुझे शिवधाम।।5।।

नवग्रहशांति स्तोत्र

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

–शंभु छन्द–

सिद्धों का वंदन इस जग में, आतम सिद्धी का कारण है।
इनकी भक्ती से भक्त करें, दुर्गति का सहज निवारण है।।
सब तीर्थंकर भगवंत एक दिन, सिद्धिप्रिया को पाते हैं।
इसलिए सभी ग्रह की शांती में, वे निमित्त बन जाते हैं।।1।।

नभ में जो सूर्य, सोम, मंगल, बुध, गुरु व शुक्र, शनि ग्रह माने।
राहू केतू मिलकर नवग्रह, ज्योतिषी देव के ग्रह माने।।
मानव के जन्म समय से ये सब, जन्मकुण्डली में रहते।
शुभ-अशुभ आदि फल देने में, राशी अनुसार निमित बनते।।2।।

जब ग्रह अनिष्टकारी होवें, तब प्रभु भक्ती रक्षा करती।
जिनसागर सूरि ने बतलाया, नवग्रह में नव प्रभु की भक्ती।।
श्रीपद्मप्रभ भगवान सूर्य-ग्रह के अरिष्ट को शांत करें।
ग्रह सोम का जब होवे प्रकोप, तब भक्त चन्द्रप्रभु याद करें।।3।।

निज मंगल ग्रह की शांति हेतु, प्रभु वासुपूज्य को नमन करो।
बुधग्रह जब देवे कष्ट तुरत, प्रभु मल्लिनाथ अर्चन कर लो।।
महावीर प्रभू गुरु ग्रह से होने, वाले कष्ट मिटाते हैं।
निज गुरुबल तेजस्वी करने हित, वर्धमान को ध्याते हैं।।4।।

श्री पुष्पदंत भगवान शुक्र-ग्रह के शांतीकारक माने।
शनिग्रह अति उग्र हुआ तो भी, मुनिसुव्रत प्रभु उसको हानें।।
ग्रह राहु अगर होवे अरिष्ट, तो नेमिनाथ का मंत्र जपो।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, ग्रह केतु शांति हेतू प्रणमो।।5।।

ये नव तीर्थंकर नवग्रह की, शांती में हेतू माने हैं।
है दुख का मूल असाता ही, पर बाह्य निमित ग्रह माने हैं।।
जिन भक्ति असाता कर्मों को, साता में परिवर्तित करती।
ग्रह से उत्पन्न सभी बाधा, तब ही तो शांत हुआ करती।।6।।

पूजन-अर्चन के साथ-साथ, ग्रहशांति मंत्र का जाप करो।
जितनी संख्या जिस मंत्र की है, उसको कर मन संताप हरो।।
अपने प्रभु के अतिरिक्त कहीं, मिथ्यामत में मत भरमाना।
दुख संकट आने पर भी कभी, जिनधर्म को भूल नहीं जाना।।7।।

नवग्रहशांती की पूजन कर, नवग्रह का कभी विधान करो।
तीर्थंकर प्रभु के गुण गाकर, निज आतम गुण भंडार भरो।।
निज जन्मकुण्डली में स्थित, ग्रह को भी उच्चस्थान करो।
फिर सूर्य-चन्द्र सम शुभ प्रकाश से, जीवन का उत्थान करो।।8।।

बीसवीं सदी की प्रथम बालसति, गणिनी माता ज्ञानमती।
उनकी शिष्या ''आर्यिका चन्दनामति'' ने यह स्तुती रची।।
पच्चिस सौ तीस वीर संवत्, तिथि फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
निजशांति हेतु ग्रहशांति हेतु, प्रभु पद में अर्पित काव्यकृती।।9।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–जंगल जंगल धूम मची है.....

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से, बात सुनी है।
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है।-2
जम्बूद्वीप से पता चली है, बात सुनी है, बात सुनी है।
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।टेक.।।

ज्ञानमती, माताजी की, प्रेरणा मिली है।
इसीलिये, भक्तों में नव, चेतना खिली है।-2
मैंने टी.वी. के माध्यम से, बात सुनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।1।।

अधोलोक में, नरक भयावह, देखो कितने।
पापकर्म, करने वाले, जाते हैं उनमें।।
मध्यलोक से मोक्षगमन की, बात सुनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।2।।

ऊर्ध्वलोक में, स्वर्ग देखकर, मन ललचाता।
पुण्यकर्म, करने से मानव, स्वर्ग में जाता।।
अर्धचन्द्रसम सिद्धशिला की, बात सुनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।3।।

यूँ तो सिद्ध, शिला से वापस, कोई न आता।
शाश्वतकाल, वहीं आत्मा, सुख-शांती पाता।।
उस सुख की तुलना संसार में, कहीं नहीं है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।41।।

कृत्रिम सिद्ध, शिला का भाव से, दर्शन करना।
सदा हृदय में, सिद्ध प्रभू का, सुमिरन करना।।
यही 'चंदनामती' आज, भावना बनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।5।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

शाम सबेरे दो घड़ी, तू आतम ध्यान लगाया कर।
यही तपस्या है बड़ी, तू राग और द्वेष हटाया कर।।टेक.।।

सोचा कर तू मन में मैं हूँ, कौन कहाँ से आया हूँ।
क्या करना था मुझे यहाँ पर, क्या कुछ कर मैं पाया हूँ।
जाना है किस ठोर को तू, दिल में ख्याल ये लाया कर।।यही तपस्या..।।1।।

पाप और पुण्य किया है कितना, रोज हिसाब लगाया कर।
पाप अगर हो जाए अधिक तो, उस पर पश्चाताप कर।।
और कभी फिर भूल कर भी, वह न पाप कमाया कर।।यही तपस्या..।।2।।

पाप कर्म को छोड़ो भाई, पुण्य कर्म को कर दीजे।
पाप कर्म संसार का कारण, यह दृढ़ निश्चय कर लीजे।।
पाप कर्म को छोड़कर तू, भाव विशुद्ध बनाया कर।।यही तपस्या..।।3।।

मैं न किसी का कोई नहि मेरा, तन से भी मैं न्यारा हूँ।
रागद्वेष नहि भाव हमारा, दर्शन ज्ञान भंडारा हूँ।।
ऐसा दिल में सोचकर तू, परपद में नहिं जाया कर।।यही तपस्या..।।4।।

मैं ही ब्रह्मा मैं ही विष्णु, मैं ही तो परमेश्वर हूँ।
मेरा आतम है परमातम, मैं शुद्धात्म जिनेश्वर हूँ।।
ऐसा दिल में सोचकर तू, निज पद में ही आया कर।।यही तपस्या..।।5।।